सफलता की कहानी किसान की जुबानी

बोकारो जिले में जैविक खेती से समृद्धि की ओर–श्रीमती संगीता कुमारी

नाम – **श्रीमती संगीता कुमारी**

पति का नाम – चंद्र शेखर महतो

पता– गांव–लुकैया, पंचायत – दरिद

पोस्ट– उत्तसरा, प्रखंड – पेटरवार

जिला– बोकारो

संपर्क नंबर – 9942263981 आधार नंबर – 7489 1270 803

भूमि –3.5 हेक्टेयर

झारखंड के बोकारो जिले की पहचान जहाँ एक ओर औद्योगिक नगरी के रूप में होती है, वहीं यहाँ के किसान भी अपनी मेहनत और नवाचार से क्षेत्र का नाम रोशन कर रहे हैं। जिले की कुल खेती योग्य भूमि लगभग 1,15,000 हेक्टेयर है, जिसमें से केवल 6 से 7 प्रतिशत भूमि ही सिंचित है। शेष क्षेत्र के किसान आज भी वर्षा पर निर्भर रहते हैं। बोकारो जिले का पेटरवार प्रखंड, जो लगभग 23,000 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला है, मुख्यतःकृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की जमीन ऊँची–नीची, पहाड़ी और जल स्तर काफी नीचे है, जिससे खेती करना आसान नहीं है। इन कठिनाइयों के बावजूद, श्रीमती संगीता कुमारी ने अपनी लगन, मेहनत और वैज्ञानिक सलाह से सफलता की नई इबारत लिखी है।

श्रीमती संगीता कुमारी, ग्राम लुकैया, प्रखंड–पेटरवार, जिला–बोकारो की निवासी हैं। उनके पास 3.5 हेक्टेयर भूमि है, जिसमें वे पहले पारंपरिक तरीके से खेती करती थीं। सिंचाई के साधन सीमित थे, जिससे फसलें अक्सर प्रभावित होती थीं और आमदनी बहुत कम थी। परिवार की जिम्मेदारियाँ और आर्थिक तंगी के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी।

एक दिन उन्होंने गाँव में कृषि विज्ञान केंद्र पेटरवार बोकारो के वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। वहाँ उन्हें प्राकृतिक खेती, जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, टपक सिंचाई, फसल चक्र, और कम लागत में अधिक उत्पादन की तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया गया। उन्होंने तुरंत इन वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने का निश्चय किया।

नवाचार और मेहनत का फल है कि श्रीमती संगीता कुमारी ने अपने खेत में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का इस्तेमाल बंद कर, जैविक खाद और प्राकृतिक उपचारों का प्रयोग शुरू किया। उन्होंने टपक सिंचाई प्रणाली लगाई जिससे कम पानी में अधिक फसल संभव हुई। सब्जियों की खेती में उन्होंने टमाटर, भिंडी, लौकी, करेला, बैंगन जैसी फसलें लगाईं। वर्मी कम्पोस्ट और गोबर खाद से उनकी फसलों की गुणवत्ता और स्वाद दोनों में सुधार हुआ।

कुछ ही महीनों में उनके खेत की उपज बढ़ गई और बाजार में उनकी जैविक सब्जियों की माँग भी बढ़ने लगी। अब वे हर साल लगभग 3 से 4 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा कमा रही हैं। इसके साथ ही, उन्होंने गाय और बकरी पालन भी शुरू किया, जिससे दूध और गोबर खाद की उपलब्धता बनी रही और आय के स्रोत भी बढ़े।

संगिता कुमारी ने अपनी सफलता को अकेले तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने अपने गाँव की 15–20 महिलाओं और किसानों को भी प्राकृतिक खेती की ट्रेनिंग दी और उन्हें जैविक खेती के लिए प्रेरित किया। आज उनके गाँव में कई किसान जैविक खेती कर रहे हैं और उनकी आमदनी में भी बढ़ोतरी हो रही है। संगिता कुमारी का कहना है,''अगर हम नई तकनीकें अपनाएँ और मेहनत करें, तो खेती में भी सुनहरा भविष्य है।''

उनकी इस उपलब्धि के लिए उन्हें कई बार सम्मानित भी किया गया। हाल ही में, उन्होंने **एग्रोटेक किसान मेला 2025** में राज्य भर से आए किसानों के सामने अपनी कहानी साझा कीए जिससे सैकड़ों किसानों को प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिली।संगीता कुमारी का मानना है कि खेती में सफलता पाने के लिए नई तकनीकें अपनाना और वैज्ञानिक सलाह लेना बेहद जरूरी है। वे कहती हैं, ''मेरे जीवन में कई बार ऐसा समय आया, जब लगा कि खेती छोड़ दूँ, लेकिन मैंने खुद पर और अपने काम पर विश्वास बनाए रखा। मैंने सीखा कि कठिनाइयाँ हर किसान के जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन अगर हम नई सोच और मेहनत के साथ आगे बढ़ें, तो नामुमकिन कुछ भी नहीं''।

श्रीमती संगीता कुमारी की कहानी बोकारो जिले ही नहीं, बल्कि पूरे झारखंड के किसानों के लिए प्रेरणा है। उन्होंने दिखा दिया कि कठिन परिस्थितियों में भी सही मार्गदर्शन, वैज्ञानिक तकनीक और मेहनत से खेती को लाभकारी और सम्मानजनक व्यवसाय बनाया जा सकता है।उनका संदेश है ''नई तकनीक अपनाएँ, मेहनत करें और खेती को अपना गौरव बनाएँ। चुनौतियाँ जरूर आएँगी, लेकिन धैर्य और लगन से सफलता निश्चित है।''

KVK Bokaro